दोहे (रहीम)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में रहीम के नीतिपरक दोहे दिए गए हैं। ये दोहे सामाजिक जीवन के सूत्र हैं। इनमें पाठकों को व्यवहार-कुशलता की सीख दी गई है। ये दोहे जीवन की विकट परिस्थिति में मार्गदर्शक का कार्य करने वाले तथा करणीय और अकरणीय व्यवहार को बताने वाले हैं। इन्हें एक बार याद करके भूलना असंभव है। वास्तव में ये नीति के दोहे जीवन के सच्चे मोती हैं।

दोहों का भावार्थ

1. **रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।**
   टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि प्रेम संबंध धागे के समान बहुत नाज़ुक होता है, अतः उसे एकदम तोड़ना नहीं चाहिए। जिस प्रकार टूटे धागे को पुनः जोड़ने पर उसमें गाँठ पड़ जाती है, उसी प्रकार प्रेम संबंध एक बार टूटने पर या तो जुड़ता ही नहीं और यदि जुड़ता है तो उसमें पहले जैसी मधुरता, स्निग्धता और आत्मीयता नहीं रहती।

2. **रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।**
   सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा को मन में ही छिपाकर रखना चाहिए। इसे हर किसी के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए; क्योंकि हमारे दुःख की बात सुनकर लोग उसे बाँटते नहीं, बल्कि हमारा उपहास करते हैं। इससे हमारा दुःख और अधिक बढ़ जाता है।

3. **एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।**
   रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि एक-एक कार्य को सिद्ध करने से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं, लेकिन यदि सब कार्य एकसाथ सिद्ध करने का प्रयास किया जाए तो सभी कार्य असफल हो जाते हैं; जैसे प्रत्येक फूल-पत्ते को न सींचकर यदि पेड़ की जड़ को सींचा जाए तो पूरे वृक्ष को सिंचाई का लाभ प्राप्त हो जाता है।

   इस दोहे का अर्थ यह भी है कि जीवन की विभिन्न समस्याओं का अलग-अलग समाधान करने के स्थान पर उनके मूल में निहित मूल कारण का समाधान करना चाहिए। मूल कारण के समाधान से सभी समस्याओं का स्वतः समाधान हो जाता है; क्योंकि फूल पत्तों के अलग-अलग सींचने से कोई लाभ नहीं होता, जबकि एक अकेले जड़ को सींचने पर सारा वृक्ष फल-फूल उठता है। आध्यात्मिक अर्थ में यह भी कहा जा सकता है कि अलग-अलग देवी-देवताओं की आराधना करने से कुछ नहीं हो सकता। एकमात्र परमब्रह्म की उपासना से व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।

4. **चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।**
   जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि चित्रकूट बहुत पवित्र और रमणीय तीर्थस्थान है। वहाँ आज भी भगवान श्रीराम का निवास है। जिस पर कोई विपदा आती है, वह इस पवित्र स्थान पर आता है और श्रीराम की कृपा से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं।

5. **दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।**
   ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि दोहा एक छोटा-सा छंद होता है, जिसमें थोड़े-से अक्षर होते हैं, लेकिन एक कुशल कवि उसमें विस्तृत अर्थ को समाहित कर उसे श्रेष्ठता प्रदान कर देता है; जैसे–एक कुशल नट सिमटकर छोटे-से घेरे में से निकल जाता है और अपने उस सिमटे रूप से अपने शरीर को विस्तार देते हुए वह कूदकर ऊपर चढ़ जाता है।

6. **धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।**
   उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि कीचड़ का जल धन्य है, जिसे पीकर छोटे जीव-जंतु तृप्त हो जाते हैं। उस समुद्र की कौन प्रशंसा करेगा, जिसके पास से संसार प्यासा ही चला जाता है। भाव यह है कि समुद्र जल का भंडार है, लेकिन उसका जल खारा होता है। अतः वह किसी की प्यास नहीं बुझा सकता। इसी प्रकार जो व्यक्ति दूसरों के काम नहीं आता वह चाहे कितना भी साधन-संपन्न हो, लेकिन प्रशंसा का पात्र नहीं होता।

7. **नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।**
   ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि संगीत की ध्वनि पर प्रसन्न होकर हिरण अपना शरीर न्योछावर कर देता है तथा मनुष्य जब किसी पर प्रसन्न होता है तो अपना धन और हित सबकुछ न्योछावर कर देता है। लेकिन वे लोग पशु से भी बढ़कर हैं, जो प्रसन्न होने पर भी किसी को कुछ नहीं देते।

8. **बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।**
   रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि जब कोई बात बिगड़ जाती है अर्थात् संबंध खराब हो जाते हैं तो लाख प्रयत्न करने पर भी वे नहीं सुधरते; जैसे–फटे दूध को कितना भी मथा जाए, लेकिन उससे मक्खन नहीं निकलता।

9. **रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।**
   जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।।

   भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि बड़ी वस्तु प्राप्त हो जाने पर छोटी वस्तु का तिरस्कार नहीं करना चाहिए; क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार काम नहीं आ सकती अर्थात् छोटी-बड़ी सभी चीज़ों का अपना-अपना महत्त्व होता है।

10. **रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।**
    बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय।।

    भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि विपत्ति आने पर व्यक्ति की निजी संपत्ति ही उसकी सहायक होती है, अन्य मित्र-रिश्तेदार उसके सहायक नहीं होते। वे केवल सहानुभूति ही प्रकट कर सकते हैं; जैसे–कमल जल में उत्पन्न होता है, जल ही उसकी निजी संपत्ति है। सूर्य उसे विकसित तो अवश्य करता है, लेकिन यदि पानी सूख जाए तो सूर्य किसी भी प्रकार कमल को नहीं बचा सकता, जल ही उसके जीवन का आधार है।

11. **रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।**
    पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।

    भावार्थ–रहीम कवि कहते हैं कि पानी बहुत महत्त्वपूर्ण है; अतः उसकी हमेशा रक्षा करनी चाहिए; क्योंकि पानी न रहने से मोती, मनुष्य और चून (आटा) व्यर्थ हो जाते हैं। यहाँ 'पानी' अनेकार्थक है जिसका अर्थ संदर्भानुसार अलग-अलग है। मोती के संदर्भ में इसका अर्थ चमक (कांति) है अर्थात् बिना पानी (चमक) के मोती व्यर्थ है। मनुष्य के संदर्भ में इसका अर्थ इज्ज़त है अर्थात् बिना पानी (मान-सम्मान) मनुष्य व्यर्थ है और चून के संदर्भ में इसका अर्थ पानी है अर्थात् बिना पानी (जल) के चून व्यर्थ है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।।

1. रहीम ने प्रेम को क्या कहा है–
(क) मोती (ख) फूल
(ग) धागा (घ) माला।

2. रहीम ने किसे तोड़ने के लिए मना किया है–
(क) पत्थर को (ख) फूल को
(ग) लकड़ी को (घ) प्रेमरूपी धागे को।

3. प्रेम के धागे को पुनः जोड़ने पर क्या होता है–
(क) वह मज़बूत हो जाता है (ख) वह चिकना हो जाता है
(ग) उसमें गाँठ पड़ जाती है (घ) वह कमज़ोर हो जाता है।

4. मन में किसे छिपाकर रखना चाहिए–
(क) प्रेम को (ख) खुशी को
(ग) घृणा को (घ) मन की व्यथा को।

5. दूसरे के मन की पीड़ा को सुनकर लोग क्या करते हैं–
(क) सहानुभूति दिखाते हैं (ख) उपहास करते हैं
(ग) पीड़ा को बाँट लेते हैं (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)।

(2) एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।।
चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।
जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस।।

1. एक-एक कार्य को सिद्ध करने से क्या होता है–
(क) कोई कार्य सिद्ध नहीं होता
(ख) सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं
(ग) मनुष्य असफल हो जाता है
(घ) कार्य बिगड़ जाते हैं।

2. पूरे वृक्ष को सिंचाई का लाभ कब होता है–
(क) जब पत्तियों को सींचा जाता है
(ख) जब फूलों को सींचा जाता है
(ग) जब जड़ को सींचा जाता है
(घ) जब तने को सींचा जाता है।

3. चित्रकूट में किसका निवास है–
(क) तुलसीदास का (ख) श्रीराम का
(ग) श्रीकृष्ण का (घ) शिव का।

4. जिस पर विपत्ति पड़ती है, वह कहाँ जाता है–
(क) हरिद्वार (ख) काशी
(ग) चित्रकूट (घ) अयोध्या।

5. 'एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।'– में अलंकार है–
(क) अनुप्रास (ख) यमक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) उपमा।

(3) धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय।।
नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत।।

1. रहीम किसे धन्य मानते हैं–
(क) वृक्ष को (ख) कीचड़ के जल को
(ग) समुद्र को (घ) पर्वत को।

2. कीचड़ का जल क्यों धन्य है–
(क) क्योंकि वह पवित्र होता है
(ख) क्योंकि वह स्वादिष्ट होता है
(ग) क्योंकि उसे पीकर छोटे जीव-जंतु तृप्त हो जाते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. समुद्र की प्रशंसा कोई क्यों नहीं करता–
(क) क्योंकि वह बड़ा होता है
(ख) क्योंकि उसका जल मीठा होता है
(ग) क्योंकि उसमें तूफ़ान आते हैं
(घ) क्योंकि उसके पास से संसार प्यासा लौट जाता है।

4. मृग किस पर प्रसन्न होकर तन न्योछावर कर देता है–
(क) हरी घास पर
(ख) शीतल जल पर
(ग) नाद पर
(घ) उपर्युक्त किसी पर नहीं।

5. रहीम के अनुसार कौन पशु से भी बढ़कर हैं–
(क) जो अधिक खाता है
(ख) जो प्रसन्न होने पर भी कुछ नहीं देता
(ग) जो प्रसन्न होकर सर्वस्व लुटा देता है
(घ) जो रात-दिन सोता रहता है।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग)।

(4) बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।
रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।।

1. लाख प्रयत्न करने पर भी क्या नहीं होता–
(क) धन प्राप्त नहीं होता है (ख) विद्या प्राप्त नहीं होती
(ग) बिगड़ी बात नहीं बनती (घ) भाग्य नहीं बदलता।

2. फटे दूध को मथने से क्या प्राप्त नहीं होता–
(क) दही (ख) छाछ
(ग) पनीर (घ) मक्खन।

3. बड़ी वस्तु को पाकर क्या नहीं करना चाहिए–
(क) अहंकार नहीं करना चाहिए
(ख) प्रसन्न नहीं होना चाहिए
(ग) छोटी वस्तु का तिरस्कार नहीं करना चाहिए
(घ) उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

4. तलवार कहाँ काम नहीं आ सकती–
(क) जहाँ कलम काम आती है
(ख) जहाँ धनुष काम आता है
(ग) जहाँ भाला काम आता है
(घ) जहाँ सुई काम आती है।

5. 'बिगरी बात बने नहीं' में कौन-सा अलंकार है–
(क) अनुप्रास (ख) यमक
(ग) श्लेष (घ) उपमा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(5) रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय।।
रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।

1. किसके बिना विपत्ति में कोई सहायक नहीं होता–
(क) अपनी संपत्ति के बिना
(ख) अपने भाई के बिना
(ग) अपने परिवार के बिना
(घ) अपने रिश्तेदार के बिना।

2. पानी के बिना कमल को कौन नहीं बधा सकता–
(क) चंद्रमा (ख) सूर्य
(ग) सरोवर (घ) भौंरा।

3. रहीम ने पानी को रखने के लिए क्यों कहा है–
(क) क्योंकि पानी के बिना प्यास नहीं बुझती
(ख) क्योंकि पानी ही जीवन है
(ग) क्योंकि पानी के बिना सब सूना है
(घ) क्योंकि पानी एक दिन समाप्त हो सकता है।

4. पानी के बिना क्या व्यर्थ है–
(क) मोती (ख) मनुष्य
(ग) चून (घ) यह सभी।

5. 'पानी गए न ऊबरैं, मोती, मानुष, चून।'–में कौन-सा अलंकार है–
(क) यमक (ख) श्लेष
(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर– 1. (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. रहीम का जन्म कब हुआ–
(क) सन् 1540 में (ख) सन् 1550 में
(ग) सन् 1556 में (घ) सन् 1545 में।

2. रहीम के काव्य का मुख्य विषय है–
(क) श्रृंगार (ख) नीति
(ग) भक्ति (घ) ये सभी।

3. रहीम किसके दरबारी कवि थे–
(क) बाबर के (ख) अकबर के
(ग) शेरशाह के (घ) जहाँगीर के।

4. रहीम ने मन की व्यथा के विषय में क्या कहा है–
(क) उसे प्रकट करना चाहिए
(ख) उसे मन में ही छिपाकर रखना चाहिए
(ग) उसे सहन करना चाहिए
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

5. सब कार्य एक साथ करने से क्या होता है–
(क) समय की बचत होती है
(ख) कार्यों में सफलता मिलती है
(ग) सभी कार्य व्यर्थ हो जाते हैं
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

6. 'अवध-नरेश' किसे कहा है–
(क) दशरथ को (ख) श्रीराम को
(ग) राजा रघु को (घ) इनमें से किसी को नहीं।

7. अवध-नरेश कहाँ रम रहे हैं–
(क) अयोध्या में (ख) मथुरा में

8. दोहे का अर्थ कैसा होता है–
(क) छोटा (ख) व्यापक
(ग) प्रभावहीन (घ) नीरस।

9. छोटे जीव-जंतु किस जल को पीकर तृप्त हो जाते हैं–
(क) नदी के जल को (ख) झरने के जल को
(ग) कीचड़ के जल को (घ) समुद्र के जल को।

10. जो प्रसन्न होने पर भी कुछ नहीं देते, वे कैसे हैं–
(क) देवता से बढ़कर हैं (ख) राजा से बढ़कर हैं
(ग) पशुओं से बढ़कर हैं (घ) महाजन से बढ़कर हैं।

11. मूल सींचकर क्या लाभ होता है–
(क) वृक्ष फलता-फूलता है
(ख) उद्देश्य तक पहुँचा जा सकता है
(ग) सारे कार्य अधूरे रह जाते हैं
(घ) जीवन सार्थक हो जाता है।

12. रहीम के अनुसार जीवन में किसका महत्त्वपूर्ण स्थान है–
(क) ईश्वर का (ख) पैसे का
(ग) अपनी-अपनी जगह सबका (घ) कार्य का।

13. धागा जोड़ने से कवि का आशय किससे है–
(क) प्रेम-संबंध दोबारा जुड़ने से (ख) व्यवहार बिगाड़ने से
(ग) लोगों से दूर रहने से (घ) लोगों को पास बुलाने से।

14. रवि कमल को कब बचा पाता है–
(क) जब कमल के आसपास जल होता है
(ख) जब रवि उदित होता है
(ग) जब कमल मुरझा रहा होता है
(घ) जब कमल खिल रहा होता है।

15. उदधि की प्रशंसा कवि क्यों नहीं करते–
(क) उदधि अपनी प्रशंसा नहीं सुनना चाहते
(ख) उसमें बहुत से जीव रहते हैं
(ग) उसके जल से प्यास नहीं बुझती
(घ) उसके पास पहले ही बहुत जल है।

16. कीचड़ के जल की क्या विशेषता है–
(क) उसमें कमल खिलता है
(ख) छोटे जीव-जंतु उस जल से प्यास बुझाते हैं
(ग) किसान उस जल से खेत को सींचता है
(घ) वह जल पवित्र होता है।

17. अवध नरेश श्री राम चित्रकूट क्यों गए थे–
(क) चित्रकूट अच्छा स्थान था
(ख) वे चित्रकूट मे घर बनाना चाहते थे
(ग) चौदह वर्ष के वनवास के समय वे वहाँ रहे थे
(घ) वे वहाँ अपनी राजधानी बनाना चाहते थे।

18. रहीम के अनुसार किसके बिना सब सूना है–
(क) धन के बिना (ख) पानी के बिना
(ग) मित्र के बिना (घ) विद्या के बिना।

19. संसार कहाँ से प्यासा चला जाता है–
(क) नदी से (ख) सरोवर से
(ग) कुएँ से (घ) समुद्र से।

20. एक कुशल नट सिमटकर कहाँ से निकल जाता है–
(क) सुरंग में से (ख) छोटे-से घेरे में से
(ग) दरार में से (घ) पिंजरे में से।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (घ) **8.** (ख) **9.** (ग) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (ग)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न
काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?

उत्तर : प्रेम-संबंध धागे के समान होता है। जिस प्रकार धागा टूटने पर यदि उसे जोड़ा जाए तो उसमें गाँठ पड़ जाती है, उसी प्रकार प्रेम संबंध टूटने पर यदि जोड़ा जाए तो उसमें पहले जैसा प्रेम, आकर्षण और विश्वास नहीं रहता। वह प्रेम-संबंध पहले जैसा मधुर और स्निग्ध नहीं बन पाता।

प्रश्न 2 : फटे दूध से मक्खन क्यों नहीं निकल सकता? रहीम के इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : दूध के फट जाने पर लाख प्रयत्न करने पर भी दूध से मक्खन नहीं निकलता। इस कथन का भाव यह है कि बात बिगड़ जाने पर अर्थात् संबंध खराब हो जाने पर लाख प्रयत्न करने पर भी संबंध फिर पहले जैसे नहीं होते।

प्रश्न 3 : हमें अपना दुःख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?

उत्तर : हमें अपना दुःख अपने मन में ही छिपाकर रखना चाहिए। उसे दूसरों के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए; क्योंकि दूसरे हमारे दुःख को बाँटते नहीं, बल्कि हमारा उपहास करते हैं। इससे हमारा दुःख और अधिक बढ़ जाता है।

प्रश्न 4 : सागर प्रशंसा के योग्य क्यों नहीं है?

उत्तर : सागर यद्यपि जल का भंडार है, लेकिन उसका जल खारा होता है। वह प्यासों की प्यास नहीं बुझा सकता। उसके पास से सब प्यासे ही वापस लौट जाते हैं। इसीलिए वह प्रशंसा के योग्य नहीं है।

प्रश्न 5 : रहीम के अनुसार 'दोहे' की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर : रहीम के अनुसार 'दोहे' की विशेषता यह है कि इसमें अक्षर बहुत कम होते हैं, लेकिन उसके अर्थ में गंभीरता बहुत अधिक होती है। अर्थात् दोहे में गागर में सागर भरा जा सकता है।

प्रश्न 6 : 'टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।'– भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव–** इस पंक्ति का भाव यह है कि जिस प्रकार टूटे धागे को पुनः जोड़ने से उसमें गाँठ पड़ जाती है, उसी प्रकार प्रेम-संबंध टूटने पर यदि पुनः जोड़ा जाता है तो वह पहले जैसा मधुर, स्निग्ध, आकर्षक और विश्वसनीय नहीं रहता। अतः प्रेम-संबंध को नहीं तोड़ना चाहिए।

प्रश्न 7 : 'मोती, मानुस, चून' के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'मोती' के संदर्भ में पानी का अर्थ उसकी चमक से है। बिना चमक या कांति के मोती व्यर्थ है। 'मानुस' अर्थात् मनुष्य के संदर्भ में पानी का तात्पर्य उसके मान-सम्मान से है, जिसके बिना मानव का जीवन व्यर्थ है। 'चून' अर्थात् आटा बिना पानी के प्रयोग में नहीं लाया जा सकता वह बिना पानी के व्यर्थ ही है।

प्रश्न 8 : 'रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।'– भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव–**प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि जिस प्रकार वृक्ष की जड़ को सींचने से सारा वृक्ष फलता-फूलता रहता है, उसी प्रकार व्यक्ति को विभिन्न समस्याओं के मूल में निहित एकमात्र कारण का समाधान करना चाहिए; क्योंकि उसका समाधान करने पर सभी समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाता है, जबकि सब समस्याओं का अलग-अलग समाधान करने पर किसी भी समस्या का पूर्ण समाधान नहीं होता।

प्रश्न 9 : सुई और तलवार के माध्यम से रहीम क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर : सुई और तलवार के माध्यम से रहीम यह समझाना चाहते हैं कि जीवन में छोटी-बड़ी सभी चीज़ों का अपना-अपना महत्त्व है; क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार काम नहीं आ सकती।

प्रश्न 10 : अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?

उत्तर : अवध नरेश श्रीराम को कहा गया है। अपने ऊपर विपत्ति आने पर वे अपने पिता के वचनों का पालन करने के लिए चित्रकूट आए थे।

प्रश्न 11 : रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?

उत्तर : रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य इसलिए कहा है; क्योंकि सागर जलनिधि है, लेकिन उसका जल खारा होने के कारण पीने योग्य नहीं होता, जबकि पंक जल को पीकर जीव-जन्तु अपनी प्यास बुझा लेते हैं।

प्रश्न 12 : रहीम ने किसे पशु से भी बदतर बताया है और क्यों?

उत्तर : रहीम ने उस व्यक्ति को पशु से भी बदतर बताया है, जो रीझने (प्रसन्न होने) पर भी कुछ नहीं देता; क्योंकि रीझने पर तो मृग अपना तन और मनुष्य अपना धन बलिदान कर देता है।

प्रश्न 13 : 'दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।'– पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव–**इसका भाव यह है कि दोहा बहुत छोटा छंद होता है, उसमें थोड़े-से अक्षर होते हैं, लेकिन एक कुशल कवि उसमें विस्तृत अर्थ वाली गंभीर बात को उसी प्रकार भर देता है, जैसे एक नट अपनी कला से सिकुड़कर कुंडली में से निकलकर शरीर को विस्तार देते हुए उछलकर ऊपर चढ़ जाता है।

प्रश्न 14 : प्रेमरूपी धागे के विषय में रहीम ने क्या सलाह दी है? क्या वह सलाह उचित है?

उत्तर : प्रेमरूपी धागे के विषय में रहीम ने यह सलाह दी है कि प्रेम के धागे को एकदम बिना सोचे-समझे नहीं तोड़ना चाहिए; क्योंकि टूटने पर वह फिर नहीं जुड़ता और यदि जुड़ता भी है तो उसमें गाँठ पड़ जाती है। हमारे विचार से कवि की यह सलाह बिलकुल उचित है; क्योंकि प्रेम-संबंध टूट जाने पर फिर उनमें पहले जैसी सरलता और आत्मीयता नहीं रहती।

प्रश्न 15 : मूल को सींचने से क्या लाभ होता है?

उत्तर : मूल को सींचने से पानी पेड़ की पत्तियों, फूलों, फलों आदि सभी अंग-प्रत्यंगों में पहुँच जाता है और सारा पेड़ हरा-भरा हो जाता है।

प्रश्न 16 : कार्य-सिद्धि के लिए रहीम ने क्या नीति बताई है?

उत्तर : कार्य-सिद्धि के लिए रहीम ने यह नीति बताई है कि कार्यों को एक-एक करके सिद्ध करना चाहिए; क्योंकि सब कार्यों को एकसाथ सिद्ध करने की कोशिश में वे सभी असफल हो जाते हैं; जैसे–पेड़ की सिंचाई करने के लिए सब फूल-पत्तों को सींचने की आवश्यकता नहीं, बल्कि जड़ को सींचना चाहिए। उसी से सारा पेड़ हरा-भरा हो जाता है।

प्रश्न 17 : पानी का महत्त्व बताने के लिए रहीम ने उसे किन संदर्भों से जोड़ा है?

उत्तर : पानी का महत्त्व बताने के लिए रहीम ने उसे मोती, मानुष और चून के संदर्भों से जोड़ा है। मोती के संदर्भ में पानी उसकी कांति या चमक है, जिसके बिना मोती महत्त्वहीन है। मनुष्य के संदर्भ में पानी उसका मान-सम्मान है, जिसके बिना मनुष्य महत्त्वहीन हो जाता है। चून के संदर्भ में पानी वह जल है, जिसमें मिलकर ही चून या आटा उपयोगी बन पाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 18 : जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?

उत्तर : जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी इसलिए नहीं कर पाता; क्योंकि विपत्ति में अपनी संपत्ति ही काम आती है। कमल जल में उत्पन्न होता है, उसी से उसे जीवन मिलता है, जल ही उसकी अपनी संपत्ति है। सूर्य उसके विकास में सहायक है, लेकिन यदि जल ही न रहे तो सूर्य की लाख कोशिश के बावजूद भी कमल जीवित नहीं रह सकता।

प्रश्न 19 : चित्रकूट की क्या विशेषता है? 'रहीम के दोहे' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : चित्रकूट की यह विशेषता है कि वह एक पवित्र और रमणीय तीर्थ स्थान है। जिस पर कोई आपत्ति आती है वह चित्रकूट जाता है। वहाँ जाकर भगवान श्रीराम की कृपा से उसके सारे कष्ट दूर हो जाते हैं।

प्रश्न 20 : 'जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।'– भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**–इसका भाव यह है कि बड़ी चीज़ को देखकर छोटी को नहीं त्यागना चाहिए; क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार कुछ नहीं कर सकती।

प्रश्न 21 : 'नट' किस कला में सिद्‌ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?

उत्तर : 'नट' स्वयं को सिकोड़ने अर्थात् छोटा बना लेने की कला में सिद्‌ध होता है, इसलिए वह स्वयं को छोटा बनाकर और उछलकर ऊपर चढ़ जाता है।

प्रश्न 22 : एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?

उत्तर : जिस प्रकार पेड़ की जड़ को सींचने से उसके अंग-प्रत्यंग में जल पहुँच जाता है और वह हरा-भरा हो जाता है, उसी प्रकार एक अकेले परमब्रह्म की साधना से व्यक्ति के सारे कार्य सिद्‌ध हो जाते हैं। अर्थात् उसका सब प्रकार से कल्याण हो जाता है।

प्रश्न 23 : रहीम के दोहों का जीवन में क्या उपयोग है? स्पष्ट कीजिए।
***अथवा* रहीम ने अपने दोहों में नीतिपरक जो बातें बताई हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : रहीम अपने दोहों के माध्यम से मानव-जीवन एवं सामाजिक संबंधों में प्रेम के महत्त्व को दर्शाते हैं। वे कहते हैं कि प्रेम के धागे को कभी मत तोड़ो; क्योंकि एक बार प्रेम-संबंध टूट जाने पर वह फिर से पहले जैसा सहज एवं स्वाभाविक नहीं हो पाता। उसमें गाँठ पड़ जाती है अर्थात् संबंधों में मनमुटाव या कड़वाहट आ जाती है, उसमें पहले जैसी आत्मीयता नहीं रहती।

रहीम अपने दोहे के माध्यम से कल्याण या परोपकार करने की प्रवृत्ति पर ज़ोर देते हैं। वे कहते हैं कि लघु जीवों की प्यास बुझाने वाला कीचड़ का पानी समुद्र की अपेक्षा अधिक महान एवं धन्य है। इसके माध्यम से वे हमें जीवन में लोगों की भलाई करने की प्रेरणा देते हैं और इसे वे बड़प्पन मानते हैं। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से यह संदेश भी दिया है कि कभी भी बड़ों की तुलना में छोटों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए; क्योंकि कई बार छोटों द्‌वारा किए जाने वाले कार्य बड़े नहीं कर सकते। दोनों का अपना अलग-अलग महत्त्व है, जैसे सुई के कार्य को तलवार नहीं कर सकती।

इस प्रकार कवि रहीम अपने नीतिपरक दोहों के बीच ही मानव-प्रेम एवं मानव-मूल्यों के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए लोगों को इसे बनाए रखने के लिए प्रेरणा देते हैं।

प्रश्न 24 : जल पंक और समुद्र के उदाहरण से कवि किस सामाजिक सत्य को उजागर करना चाहता है?

उत्तर : जल पंक और समुद्र के उदाहरण से कवि रहीम इस सत्य को उजागर करना चाहते हैं कि समाज में जो परोपकार करता है तथा जिसके साधन और संपत्ति दूसरों के काम आते हैं, उसी को समाज से प्रशंसा मिलती है। ऐसे धनवान को समाज कभी प्रशंसा नहीं देता, जिसका धन किसी की भी आवश्यकता पूर्ण नहीं करता। समाज की दृष्टि में वह जल पंक धन्य है, जिसे पीकर छोटे जीव तृप्त हो जाते हैं तथा जल का आगार समुद्र उपेक्षित है, जिसके पास से सारा संसार प्यासा ही लौट जाता है।

प्रश्न 25 : 'रहीम के दोहे' श्रेष्ठ कविता का उदाहरण हैं; क्योंकि वे समय के प्रभाव से न तो फीके पड़े हैं और न उनकी लोकप्रियता कम हुई है। क्यों? अपने विचार लिखिए।

उत्तर : रहीम के दोहे जीवन की सत्यता पर आधारित हैं, वे शाश्वत सत्य हैं। इसलिए उन पर काल का प्रभाव नहीं पड़ा है। उनमें जो सत्य कहा गया है, वह हर देश-काल में सत्य ही है। ये दोहे इतनी सरल, सरस और संक्षिप्त भाषा में रचे गए हैं कि लोगों की ज़ुबान पर चढ़ गए हैं। इसलिए इनकी लोकप्रियता आज भी कम नहीं हुई है। ये सुनने वाले के दिल में उतर जाते हैं। रहीम ने अपनी बातों के पक्ष में जो उदाहरण दिए हैं, वे बहुत सटीक और व्यावहारिक हैं; जैसे– प्रेम का धागा न तोड़ो; क्योंकि एक बार टूटने पर उसमें गाँठ पड़ जाती है। बिगड़ी बात पुनः वैसे ही नहीं बनती, जैसे फटे दूध को मथने से मक्खन नहीं निकलता। अपनी इन सब विशेषताओं के कारण ये दोहे सदाबहार हैं।

प्रश्न 26 : बात न बिगाड़ने और प्रेम-संबंध न तोड़ने के विषय में रहीम ने नीति की कौन-सी बातें बताई हैं?

उत्तर : बात न बिगाड़ने के विषय में रहीम ने कहा है कि बात को बिगाड़ना नहीं चाहिए; क्योंकि बिगड़ी बात अर्थात् बिगड़े हुए संबंध फिर नहीं बनते, चाहे कितना भी प्रयास किया जाए। जिस प्रकार फटे अर्थात् बिगड़े हुए दूध को कितना भी मथा जाए, लेकिन उससे मक्खन नहीं निकलता है। इसी प्रकार उन्होंने प्रेम-संबंध के विषय में बताया है कि प्रेम-संबंध कच्चे धागे के समान होता है, उसे अनायास ही नहीं तोड़ देना चाहिए; क्योंकि जिस प्रकार धागे के टूटने पर उसे पुनः जोड़ने से उसमें गाँठ पड़ जाती है, उसी प्रकार प्रेम-संबंध को तोड़कर पुनः जोड़ने पर उसमें पहले जैसी सरलता और आत्मीयता नहीं रहती है।

प्रश्न 27 : 'रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिये डारि।'–इसके माध्यम से रहीम क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर : रहीम कहते हैं कि जीवन में छोटे-बड़े सभी का महत्त्व है। प्रायः आकार और प्रभाव में बड़ी दीखने वाली वस्तुओं का महत्त्व अधिक आँका जाता है। परंतु यह आकलन ठीक नहीं होता। उदाहरण देते हुए रहीम कहते हैं कि दीखने में तलवार बड़ी होती है। उसका दबदबा भी बहुत अधिक होता है। लोग तलवार को अधिक सम्मान देते हैं। परंतु वे भूल जाते हैं कि छोटी-सी सुई तलवार से भी अधिक काम करती है। बल्कि रचना और बुनावट का सारा काम सुई ही करती है। यदि सुई न हो तो कुछ भी सिया नहीं जा सकता। एक तलवार जोर लगाने पर भी सुई की जगह नहीं ले सकती। यही स्थिति मानव-मानव के संबंधों के बारे में है। जो लोग खुद को बड़ा, राजा या शासक या धन्नासेठ समझते हैं, उनका महत्त्व अपनी जगह है किंतु छोटे किसान, मज़दूर और आम लोगों का स्थान अपनी जगह है। यदि सेवक, चाकर और कर्मचारी न हों तो राजा का सारा ठाठ-बाट बिखर सकता है। अतः हमें बड़ों के सामने छोटों को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। वे अपनी जगह मूल्यवान हैं।

प्रश्न 28 : रहीम ने दान की महिमा किस प्रकार सिद्‌ध की है?

उत्तर : रहीम कहते हैं कि सच्चा मनुष्य वह है जो कि प्रसन्नता के क्षण में धन-संपदा दान करने को तुरंत तैयार हो जाता है। वे अपनी बात का समर्थन हिरण के उदाहरण से करते हैं। हिरण संगीत की तान सुनकर मुग्ध हो जाता है। उसकी मुग्धता का लाभ उठाकर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भी संगीत का आनंद लेता है। कुछ भले मनुष्यों में भी यह गुण होता है। जब वे किसी बात पर रीझ जाते हैं तो अपना सब कुछ लुटाने को तैयार हो जाते हैं। वे सम्मोहन करने वाले को प्रेम करते हैं, उस पर रीझते हैं, झूमते हैं और उसके लिए बड़े-से-बड़ा दान भी दे देते हैं। जिन मनुष्यों में यह उदारता, तरलता और सहृदयता नहीं होती, वे पशु से भी तुच्छ होते हैं। उनका जीवन निरर्थक है, बेकार है।

आदमी नामा (नज़ीर अकबराबादी)

नोट – सी०बी०एस०ई० के निर्देशानुसार इस पाठ से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे

एक फूल की चाह (सियारामशरण गुप्त)

नोट – सी०बी०एस०ई० के निर्देशानुसार इस पाठ से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।।

1. **रहीम ने प्रेम को क्या कहा है–**
   (क) मोती (ख) फूल
   (ग) धागा (घ) माला।
2. **रहीम ने किसे तोड़ने के लिए मना किया है–**
   (क) पत्थर को (ख) फूल को
   (ग) लकड़ी को (घ) प्रेमरूपी धागे को।
3. **प्रेम के धागे को पुनः जोड़ने पर क्या होता है–**
   (क) वह मज़बूत हो जाता है
   (ख) वह चिकना हो जाता है
   (ग) उसमें गाँठ पड़ जाती है
   (घ) वह कमज़ोर हो जाता है।
4. **मन में किसे छिपाकर रखना चाहिए–**
   (क) प्रेम को (ख) खुशी को
   (ग) घृणा को (घ) मन की व्यथा को।
5. **दूसरे के मन की पीड़ा को सुनकर लोग क्या करते हैं–**
   (क) सहानुभूति दिखाते हैं
   (ख) उपहास करते हैं
   (ग) पीड़ा को बाँट लेते हैं
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **धागा जोड़ने से कवि का आशय किससे है–**
   (क) प्रेम-संबंध दोबारा जुड़ने से
   (ख) व्यवहार बिगाड़ने से
   (ग) लोगों से दूर रहने से
   (घ) लोगों को पास बुलाने से।
7. **रहीम का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1540 में (ख) सन् 1550 में
   (ग) सन् 1556 में (घ) सन् 1545 में।
8. **कीचड़ के जल की क्या विशेषता है–**
   (क) उसमें कमल खिलता है
   (ख) छोटे जीव-जंतु उस जल से प्यास बुझाते हैं
   (ग) किसान उस जल से खेत को सींचता है
   (घ) वह जल पवित्र होता है।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?**
10. **कार्य-सिद्धि के लिए रहीम ने क्या नीति बताई है?**
11. **एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?**
12. **'रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिये डारि।'–इसके माध्यम से रहीम क्या संदेश देना चाहते हैं?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in